देव संस्कृति विश्वविद्यालय - शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग

पी-एच. डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

विषय

श्री दुर्गासप्तशती में योग के विविध आयाम - एक विवेचनात्मक अध्ययन

निर्देशक
डॉ. प्रणव पण्ड्या
कुलाधिपति
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
निदेशक
ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान
सम्पादक
अखण्ड ज्योति मासिक
एवं
अध्यक्ष
अखिल विश्व गायत्री परिवार
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

शोध छात्रा
चारु शर्मा
प्रवक्ता
मानव चेतना एवं
योग विज्ञान विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

सह निर्देशक
डॉ. ईश्वर भारद्वाज
अध्यक्ष
मानव चेतना एवं योग
विज्ञान विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

२००४

विषय सूची

१. शोध अध्ययन का महत्त्व ३-६

(Significance of Research Study)

२. साहित्य सर्वेक्षण ६-७

(Literature Review)

३. शोध की समस्या ७

(Problem of Research)

४. शोध समस्या का औचित्य ७

(Justification of Research Problem)

५. शोध के उद्देश्य ८

(Objectives of Research)

६. परिकल्पना ८-९

(Hypothesis)

७. शोध विधि ९

(Research Methodology)

८. प्रस्तावित शोध कार्य की योजना १०-११

(Planning of Proposed Research Work)

९. सहायक ग्रन्थ सूची १२-२२

(Bibilography)

१. शोध अध्ययन का महत्त्व
(Significance of Research Study)

सप्तशत्याश्च सकलं, तत्त्वं वेद्मयमेव हि।
पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति वेत्यर्द्धं तु प्रजापतिः॥
व्यासस्तुर्य्यांशकं वेत्ति, कोट्यंशमितरे जनाः॥[१]

मेरु तन्त्र में भगवान् सदाशिव कहते हैं कि श्रीदुर्गासप्तशती के सम्पूर्ण रहस्यार्थ को केवल मैं ही जानता हूँ। भगवान् विष्णु को इसके तीन चरणों का ज्ञान है। श्री ब्रह्मा जी इसके दो चरणों को जानते हैं। अन्य लोग तो इसका करोड़वाँ अंश ही जानते हैं।

भगवान् शिव की इस वाणी में श्रीदुर्गासप्तशती के गहरे आध्यात्मिक रहस्यों के संकेत छिपे हैं। और इस सत्य का स्पष्टीकरण भी है कि स्वयं शिव तत्त्व में लीन हुए बिना शक्ति के सम्पूर्ण मर्म को नहीं जाना जा सकता। लेकिन वे योग के विविध आयाम क्या हैं? योग साधना के वे सूत्र, सिद्धान्त व प्रक्रियाएँ कौन सी हैं? जिनके द्वारा श्रीदुर्गासप्तशती जीव को शिव बनाने का पथ प्रशस्त करती है। इन प्रश्नों के उत्तर के लिए गहन शोध-अनुसन्धान की आवश्यकता है। न जाने क्यों अभी तक यह आवश्यकता पूरी नहीं हो सकी है। ज्यादातर विद्वानों ने इन प्रश्नों के उत्तर में मौन रहना ही उचित समझा है। हाँ कुछ ने इस तरह की शोध न हो पाने पर अपनी दुःखद प्रतिक्रिया जरूर जतायी है।

बाबू सम्पूर्णानन्द इन्हीं में से एक हैं। वह अपने एक लेख में कहते हैं- 'श्रीदुर्गासप्तशती हम हिन्दुओं की एक पूज्य पुस्तक है। दुर्भाग्यवश वह हममें से बहुतों के लिए नित्यपाठ की पोथी है। जो लोग उसे स्वयं नित्य नहीं पढ़ते उनके घर भी दोनों नवरात्रियों में पुरोहित जी उसका पाठ कर जाया करते हैं। ....मैं 'दुर्भाग्यवश' इसलिए कहता हूँ कि मेरी ऐसी धारणा है कि आजकल जो पुस्तक हमारे नित्य पाठ की पोथी हो जाती है, उसकी हम प्रायः दुर्गति कर डालते हैं। उसके शब्दों को रट लेने में ही हमारी इति कर्त्तव्यता रह जाती है। उसके अर्थ और भाव से हमें प्रायः कोई सरोकार नहीं रह जाता।

---

१. मेरूतंत्र, उद्धृत- श्री श्यामानन्द नाथ- सप्तशती सूक्त रहस्य, पृ. ५

मेरी निज की धारणा है- और यह धारणा कई बार की आवृत्ति पर अवलम्बित है कि सप्तशती के श्लोकों में मनोविज्ञान का बड़ा अच्छा समावेश है, और वह योग और वेदान्त की सुन्दर शिक्षाओं से परिप्लुत है। मैं इस लेख में सब बातों को दिखलाने का दावा तो नहीं कर सकता, पर विद्वानों का ध्यान इस ग्रन्थ रत्न की ओर अवश्य आकृष्ट करना चाहता हूँ। दु:ख की बात यह है कि इतने आदमी इस पुस्तक को पढ़ते और सुनते हैं पर जिन लोगों ने इसकी व्याख्या करने का ठीका लिया है, वह इसके तत्त्वों को या तो समझते नहीं या लोगों के सामने रखते नहीं। .... इस सम्बन्ध में मेरा उद्देश्य केवल इतना ही रहा है कि इस पुस्तक की उत्तमता और इसके विषय की गम्भीरता की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करूँ। यह केवल अर्धशिक्षित पुरोहितों द्वारा पाठ कराने की सामग्री न रह जाय। यदि इस उद्देश्य में मुझे किञ्चित मात्र सफलता हुई तो मैं अपने को धन्य समझूँगा।'[2]

बाबू सम्पूर्णानन्द सुप्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी, सम्मानित राजनेता होने के साथ योग के उच्चकोटि के साधक व योग विषय के उत्तम लेखक भी थे। उनके द्वारा रचित चिद्विलास ग्रन्थ योग साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। श्रीदुर्गासप्तशती पर उनकी यह लेखकीय टिप्पणी अनुभव कराती है कि इस विषय पर शोध-अनुसन्धान की आवश्यकता क्यों है? और इस पर अध्ययन का महत्त्व क्या है? यह पवित्र पुस्तक स्वयं मेरे भी आध्यात्मिक प्रयोगों का केन्द्र है। इन प्रयोगों को करते समय इस पुस्तक के विविध मन्त्रों ने मेरी अन्तर्चेतना को छुआ है। और मेरे अन्तस् में योग के विविध आयाम संकेत रूप में उभरे हैं। वैसे भी स्वयं 'दुर्गा' शब्द की व्याख्या में भी योग तत्त्वों की ध्वनि ही गूंजती है। **'दु:खेन अष्टांगयोगकर्मोपासना रूपेण क्लेशन गम्यते प्राप्यते या सा दुर्गा:'**- जो अष्टांग योग, कर्म एवं उपासना रूप दु:साध्य साधन से प्राप्त होती है- वे जगदम्बिका दुर्गा कहलाती है।[3]

कवच, कीलक, अर्गला एवं प्राधनिक, वैकृतिक व मूर्ति रहस्य अपने इन छ: अंगों सहित दुर्गासप्तशती योग के विविध सिद्धान्तों व प्रक्रियाओं का संकेत करती है। इसके प्रथम अध्याय में मेधा ऋषि के वचनों में अज्ञान का कारण व स्वरूप ज्ञान प्राप्ति के उपाय का संकेत दिए गए हैं।[4] इसके बाद दसवें अध्याय में देवी का कथन- 'मैं अकेली ही हूँ। इस संसार में मेरे सिवा दूसरा कौन है।'[5] अद्वैत

---

२. बाबू सम्पूर्णानन्द- श्री दुर्गासप्तशती- कल्याण, शक्ति अंक, पृ. १५५-१५६
३. श्रीदुर्गासप्तशती- अनु. - श्री रामनारायण दत्त जी शास्त्री, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृ. ३०
४. श्रीदुर्गासप्तशती - १/४७-५८
५. श्रीदुर्गासप्तशती - १०/५

तत्त्व की प्रतिष्ठा करता है। इसी तरह भक्ति तत्त्व श्रीदुर्गासप्तशती का प्राण है। इसमें वर्णित रात्रिसूक्त[६] शक्रादि स्तुति,[७] देवीसूक्त,[८] नारायणी स्तुति[९] में भक्ति और भगवती के स्वरूप की व्यापक व्याख्या है। इन स्थानों में भक्ति के सिद्धान्त व प्रक्रिया का सांकेतिक विवरण उपलब्ध होता है।

कुण्डलिनी योग की सम्पूर्ण प्रक्रिया अपने स्वरूप व सिद्धान्त इस ग्रन्थ के अन्तस् में समायी है। प्रतीकों, संकेतो व अलंकारिक भाषा में इसके सम्पूर्ण विज्ञान को दर्शाया गया है। युगऋषि आचार्य श्री के शब्दों में- 'कुण्डलिनी को जगाने और उसके जागने पर आक्रमण होने की क्रिया का पुराणों ने बड़ा ही अलंकारिक और हृदयग्राही रूप से वर्णन किया है। महिषासुर और दुर्गा का युद्ध इसी आध्यात्मिक रहस्य का प्रतीक है। अपनी मुक्ति की कामना करते हुए देवी के हाथों मरने की कामना से उत्साहित होकर महिषासुर (महिः पृथ्वी आदि पंचभूतों से बना हुआ मन)। चण्डी (कुण्डलिनी) से लड़ने लगता है। उस चुपचाप बैठी हुई देवी पर आक्रमण करता है। देवी क्रुद्ध होकर उससे युद्ध करती है। उसके वाहन महिष को, संस्कारों के समूह को चबा डालती है। मन के भौतिक आवरण को महिषासुर के शरीर को, दशों भुजाओं से दशो दिशाओं में सब ओर से विदीर्ण कर डालती है। और अन्त में महिषासुर चण्डी की ज्योति में मिल जाता है। महाशक्ति का अंश होकर जीवन लाभ को प्राप्त कर लेता है।'[१०]

कुण्डलिनी योग की इस रहस्यमयी प्रक्रिया का श्रीदुर्गासप्तशती में बड़ा गहन व व्यापक विवेचन है। इसमें १. कुण्डलिनी का मध्य मार्ग में प्रवेश, २. बिन्दु का दृढ़ीकरण और ३. ध्यान की सहजावस्था- इन तीनों के महात्म्य सहित इनकी विधियों का प्रतिपादन है। इसके संकेतों के आधार पर सिद्धान्त व प्रक्रिया का विशद् विवेचन कुण्डलिनी योग के सर्वथा नवीन आयाम को प्रकट करेगा। कुण्डलिनी योग की भाँति मंत्र योग इस ग्रन्थ के प्रत्येक शब्द में प्रकाशित है। सत्य तो यह है कि इस पुस्तक का प्रत्येक श्लोक मंत्र है। और उसकी अपनी प्रयोग विधि है। जो कालक्रम में लुप्त हो गयी है। इसका अन्वेषण इस शोध अध्ययन के महत्त्व को प्रकट करेगा।

---

६. श्रीदुर्गासप्तशती - १/७०-८७
७. श्रीदुर्गासप्तशती - ४/३-२७
८. श्रीदुर्गासप्तशती - ५/९-८२
९. श्रीदुर्गासप्तशती - ११/२-३५
१०. आचार्य श्रीराम शर्मा - गायत्री महाविज्ञान- प्रथम भाग, पृ. १२६

सबसे अन्त में इस अध्ययन के महत्त्व को नया आयाम देने वाला एक अन्य तथ्य भी है। जो वैज्ञानिक प्रयोग से सम्बन्धित है। हालांकि अपनी सम्पूर्णता में इस प्रयोग को करना अति दुष्कर है। परन्तु इसके सार अंश के रूप में नवार्ण मंत्र एवं सप्तशती के ७०४ श्लोकों के सार रूप में सप्तश्लोकी दुर्गा के शरीर क्रिया वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक प्रभावों के ऑकलन के द्वारा यह कार्य किया जाएगा। इस प्रक्रिया के साथ यह शोध अध्ययन अपने महत्त्व में सम्पूर्णता व सार्थकता को अभिव्यक्ति देगा।

२. साहित्य सर्वेक्षण
(Literature Review)

श्रीदुर्गासप्तशती पर उपलब्ध ग्रन्थों को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है। इसके पहले वर्ग में मूल ग्रन्थों का स्थान है। जिनमें श्रीदुर्गासप्तशती की महिमा व कतिपय साधना प्रक्रियाओं के संकेत मिलते हैं। ऐसे ग्रन्थों में मेरूतन्त्र, नेत्र तन्त्र, कात्यायनी तन्त्र, वाराही तन्त्र, मंत्र महोदधि, वृहद् ज्योतिषार्णव, चिदम्बर संहिता व मंत्रमहार्णव आदि मुख्य हैं। इन ग्रन्थों में उपलब्ध संकेत इतनी कूट भाषा में है, जिसका सही अर्थ सर्वसाधारण को तो क्या विशेषज्ञों को भी समझ पाना कठिन है।

दूसरे वर्ग के ग्रन्थों में टीका या व्याख्या साहित्य है। इन व्याख्याओं में सर्वोपरि है - दुर्गप्रदीप, गुप्तवती, चतुर्धरी, शान्तनवी, नागोजीभट्टी, जगच्चन्द्रिका व दंशोद्धार टीकाएँ। हरिकृष्ण शर्मा ने इनका संकलन 'सप्तटीका' शीर्षक से किया है। इन मूल टीकाओं को ही आधार बनाकर बाद के विद्वानों ने अपनी टीकाएँ लिखी हैं। इनके बाद में लिखी गई टीकाओं में पं. लक्ष्मीनारायण गोस्वामी की 'दुर्गातन्त्र शास्त्रः दुर्गार्चन सृतिः', पं. रामलखन पाण्डेय की 'सर्वांग दुर्गार्चन सृतिः', पं. शिवदत्त शास्त्री की 'दुर्गार्चन पद्धति', कृष्णानन्द शास्त्री की 'श्रीदुर्गार्चन सृतिः', पं. रामनारायण दत्त शास्त्री की 'श्रीदुर्गासप्तशती' एवं पं. सरयू प्रसाद द्विवेदी की 'सप्तशती सर्वस्वम्'। इनके अतिरिक्त एक अन्य पुस्तक मिलती है- पं. रमेशचन्द्र मिश्र की 'सबोध दुर्गासप्तशती एवं याग विधान'। इन सभी टीका ग्रन्थों में सप्त टीकाओं के अतिरिक्त केवल सप्तशती सर्वस्वम् ही ऐसी है जिसमें सप्तशती के श्लोकों के अर्थ पर गहरा विचार किया गया है। अन्यथा अन्य ग्रन्थों में पाठविधि एवं कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रयोगों के विवरण ही प्राप्त होते हैं।

श्रीदुर्गासप्तशती पर प्रकाशित हुए ग्रन्थों का एक तीसरा वर्ग भी है। इस तीसरे वर्ग के ग्रन्थों में सप्तशती की यत्किञ्चित तात्त्विक चर्चा देखने को मिलती है। ऐसे ग्रन्थों की संख्या अति अल्प है। इनमें से पहले क्रम पर है- वासुदेव शरण अग्रवाल का ग्रन्थ 'मार्कण्डेय पुराण- एक सांस्कृतिक अध्ययन'। इसके अलावा श्री श्यामानन्दनाथ द्वारा लिखित दो ग्रन्थ मिलते हैं। इनमें से पहला ग्रन्थ है-'सप्तशती तत्त्व' एवं दूसरा ग्रन्थ है 'सप्तशती सूक्त रहस्य'। इनके अतिरिक्त सिबेन्दु माना द्वारा किया गया एक शोध अध्ययन है- 'मदर गाडेस चण्डी' है। जो दुर्गासप्तशती के सामाजिक प्रभाव की व्याख्या है।

इन सभी तीनों वर्गों के ग्रन्थों का गहनता से अवलोकन करें तो यही पता चलता है कि श्रीदुर्गासप्तशती के अध्यात्मिक रहस्यों की सम्पूर्ण एवं क्रमवार व्याख्या अभी तक अनुपलब्ध है। इसके अन्तर्गत आने वाली यौगिक विधियों की ओर तो किसी का ध्यान ही नहीं गया।

३. शोध की समस्या
(Problem of Research)

'श्रीदुर्गासप्तशती में योग के विविध आयाम - एक विवेचनात्मक अध्ययन'। इसके अन्तर्गत मूलत: तीन बिन्दु है- १. श्रीदुर्गासप्तशती में प्राप्त संकेतों के आधार पर योग के विविध आयामों (ज्ञानयोग, भक्तियोग, कुण्डलिनी योग व मंत्रयोग) की खोज। २. इनके सिद्धान्तों व प्रक्रियाओं का विवेचन। ३. श्रीदुर्गासप्तशती के मन्त्र सार एवं पाठ सार के रूप में नवार्ण मन्त्र एवं सप्तश्लोकी दुर्गा का प्रयोगिक अध्ययन व विवेचन।

४. शोध समस्या का औचित्य
(Justification of Research Problem)

श्रीदुर्गासप्तशती पर उपलब्ध साहित्य के गहन अवलोकन एवं शोध समस्या के महत्त्व के विविध पहलुओं के विवेचन से इस शोध समस्या के पूर्णतया मौलिक व औचित्यपूर्ण होने की सम्भावना बनती है। इस पर किए जाने वाले अनुसन्धान से योग साहित्य में सर्वथा नवीन आयाम का विकास होगा।

५. शोध के उद्देश्य
(Objectives of Research)

श्रीदुर्गासप्तशती अपने आध्यात्मिक रहस्यों की गहनता की अभिव्यक्ति पाँच आयामों में करती है। इसी वजह से इसके प्रत्येक श्लोक के पाँच भेद हैं। १. प्रथम स्थूल कथा लक्ष्य है। यह भक्तिपूर्ण साधारण पाठ के रूप में प्राप्त किया जाता है। २. द्वितीय मांत्रिक लक्ष्य है- इसमें प्रत्येक श्लोक को मंत्र माना गया है। ३. तृतीय यौगिक लक्ष्य है। इसमें कुण्डलिनी के उत्थापन आदि सर्व यौगिक साधनाओं के लिए प्रत्येक श्लोक का षट्दल चक्र में जप किया जाता है। ४. चतुर्थ अन्तर्लक्ष्य है। इसमें आन्तरिक भाव से सम्बन्धित ज्ञानयोग का उपदेश है।

इन्हीं चार आयामी रहस्यों को ध्यान में रखकर इस शोध के निम्न उद्देश्य तय किए गए हैं।

१. श्रीदुर्गासप्तशती की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करना।
२. श्रीदुर्गासप्तशती में मिलने वाले संकेतों के आधार पर ज्ञानयोग के सिद्धान्त, स्वरूप व प्रक्रिया का विवेचन करना।
३. श्रीदुर्गासप्तशती में दिए गए संकेतों के आधार पर भक्तियोग के सिद्धान्त, स्वरूप व प्रक्रिया का निर्धारण करना।
४. श्रीदुर्गासप्तशती की अन्तर्धारा के रूप में प्राप्त कुण्डलिनी तत्त्व की व्याख्या एवं प्रक्रिया की विवेचना करना।
५. श्रीदुर्गासप्तशती के प्रत्येक श्लोक के मांत्रिक महत्त्व निरुपण व प्रयोग विधि का स्पष्टीकरण।
६. श्रीदुर्गासप्तशती के सार रूप माने जाने वाले नवार्ण मंत्र एवं सप्तश्लोकी दुर्गा के वैज्ञानिक प्रयोग द्वारा इसके महत्त्व का मूल्यांकन करना।

६. परिकल्पना
(Hypothesis)

शताब्दियों से श्रीदुर्गासप्तशती को महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक ग्रन्थ के रूप में अनुभव किया जाता रहा है। इस मूल ग्रन्थ के अन्तर्गत व इसके सम्बन्ध में अन्य ग्रन्थों में जो संकेत मिलते हैं। उसके

आधार पर यह परिकल्पना की गयी है कि इसमें योग के विविध आयाम अन्तर्निहित है। इस परिकल्पना को निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट किया गया है-

१. श्रीदुर्गासप्तशती में ज्ञानयोग के सिद्धान्त एवं प्रक्रियाएँ अन्तर्निहित है।

२. श्रीदुर्गासप्तशती में भक्तियोग के सिद्धान्त एवं प्रयोगविधि अन्तर्निहित है।

३. श्रीदुर्गासप्तशती में कुण्डलिनी योग के सिद्धान्त एवं प्रयोगविधि अन्तर्निहित है।

४. श्रीदुर्गासप्तशती में मन्त्रयोग के सिद्धान्त एवं प्रयोगविधि अन्तर्निहित है।

५. श्रीदुर्गासप्तशती की कतिपय साधना प्रक्रियाओं पर वैज्ञानिक प्रयोग किए जा सकते हैं।

इस प्रायोगिक परिकल्पना के बिन्दुओं को वैज्ञानिक प्रयोग अध्याय में दिया गया है।

७. शोध विधि
(Research Methodology)

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्वपूर्ण भाग श्रीदुर्गासप्तशती में योग के विविध आयामों के सिद्धान्त निरुपण व इनकी प्रक्रियाओं के विवेचन से सम्बन्धित है। इसके लिए योग के इन विविध आयामों से सम्बन्धित पुरातन शास्त्र ग्रन्थों एवं विभिन्न कालों में हुए योगियों व योगशास्त्र के अधिकारिक व विद्वानों के ग्रन्थों के परिप्रेक्ष्य में इन योग सिद्धान्तों का निरुपण व विवेचन होगा।

इसके लिए भारतीय एवं अन्य विदेशी रचनाओं, विश्व स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित शोध लेखों के आधार पर शोध सामग्री का संचयन किया जाएगा। यह शोध विधि तीन चरणों में पूर्ण होगी। १. विविध स्रोतों से शोध सामग्री का संचयन। २. उपलब्ध सामग्री के आधार पर श्रीदुर्गासप्तशती में मिलने वाले योग के विविध आयामों से सम्बन्धित संकेतों का विश्लेषण। ३. इस विश्लेषण के निष्कर्ष के रूप में विभिन्न योगों के सिद्धान्तों व प्रक्रियाओं का निरुपण व विवेचन।

इन तीन चरणों में पूरी होने वाली इस शोध विधि से शोध कार्य पूर्ण किया जाएगा।

शोध कार्य का जो भाग वैज्ञानिक प्रयोग से सम्बन्धित है उसके लिए उपयुक्त विधि तन्त्र की व्याख्या शोध प्रारूप के वैज्ञानिक प्रयोग अध्याय में दी गई है।

८. प्रस्तावित शोध कार्य की योजना
(Planning of Proposed Research Work)

अध्याय -१. विषय प्रवेश - शक्ति उपासना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- पुरातात्त्विक प्रमाण
- विभिन्न संस्कृतियों में शक्ति उपासना के विविध रूप
- श्रीदुर्गासप्तशती - आदिशक्ति का मंत्रावतरण
- श्रीदुर्गासप्तशती के विविध रूप एवं टीकाएँ
- श्रीदुर्गासप्तशती के दार्शनिक और साधनात्मक रहस्यार्थ

अध्याय-२. ज्ञानयोग

- ज्ञान का महत्त्व और दार्शनिक पृष्ठभूमि
- श्रीदुर्गासप्तशती में ब्रह्म, माया और जगत्
- ज्ञानयोग का साधना मार्ग- बहिरंग और अंतरंग साधन
- समाधि एवं जीवनमुक्त अवस्था
- समाधि वैश्य की साधना और सिद्धि

अध्याय-३. भक्तियोग

- भगवान्, भक्त, भक्ति
- भक्ति के भेद - गौणी, अहैतुकी और नवधा भक्ति
- भक्ति के मूल तत्त्व और सोपान
- भक्ति की फलश्रुतियाँ एवं महत्ता
- भक्ति परम्परा

अध्याय-४. कुण्डलिनी योग

- साधना विज्ञान में कुण्डलिनी योग
- कुण्डलिनी योग का स्वरूप एवं भेद

- कुण्डलिनी जागरण की पृष्ठभूमि एवं प्रक्रिया
- कुण्डलिनी योग में षट्चक्र जागरण
- कुण्डलिनी योग की अनुभूतियाँ एवं प्रभाव

अध्याय-५. मन्त्रयोग

- मन्त्रार्थ, मन्त्र का स्वरूप एवं भेद
- मन्त्र विनियोग एवं संस्कार
- मन्त्र दीक्षा एवं मन्त्र साधक
- जप एवं पाठ का विज्ञान और ध्यान
- श्रीदुर्गासप्तशती के विविध प्रयोग और कामनापूरक सिद्ध सम्पुट मन्त्र

अध्याय-६. वैज्ञानिक प्रयोग

वैज्ञानिक प्रयोग श्रीदुर्गासप्तशती की कतिपय प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक व प्रायोगिक मूल्यांकन करने का प्रयत्न है।

अध्याय-७. उपसंहार

शोध अध्ययन के उपसंहार के क्रम में सम्पूर्ण अध्ययन की समीक्षा करते हुए अध्ययन के निष्कर्ष का प्रतिपादन किया जाएगा। साथ ही सामयिक परिस्थितियों में इसके समग्र मूल्यांकन का प्रस्तुतिकरण होगा। इसी के साथ वे महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए जाएँगे जो कि श्रीदुर्गासप्तशती के आधार पर योग साधना करने वाले योग साधकों और भविष्य में इसके अन्य आयामों पर अनुसन्धान करने वाले शोधार्थियों के लिए लाभप्रद सिद्ध हो सके।

विश्वास है प्रस्तावित शोध कार्य की समूची योजना अपनी सम्पूर्ण दृष्टि के कारण शोध कार्य के सार्थक स्वरूप को अभिव्यक्ति देगी।

९. सहायक ग्रन्थ सूची
(Bibilography)
मूलग्रन्थ : धार्मिक

संहिता ग्रन्थ-

१. अथर्ववेद - (सं) आर. रॉथ और डब्ल्यू.डी. हि वटने, बर्लिन, १९२४

२. ऋग्वेद - आर.टी.एच. ग्रिफिथ का अनुवाद (दो भाग), बनारस, १९६३

३. काठक संहिता - (सं) वान श्रेडर, लाइपजिग, १९००

४. तैत्तिरीय संहिता - आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज

५. मैत्रायणी संहिता - (सं) वान श्रेडर, लाइपजिग, १८८१-८६

६. वाजसनेयी संहिता - महीधर भाष्य सहित, ए. वैबर, लन्दन, १८५२

७. सामवेद - (अनु.) आर.टी.एच. ग्रिफिथ, बनारस, १८९३

ब्राह्मण -

८. ऐतरेय ब्राह्मण - (अनु.) कीथ, हार्वर्ड ओरियण्टल सीरीज, भाग २५, १९२०

९. कौशीतिकी ब्राह्मण - आन्दाश्रम संस्कृत सीरीज

१०. गोपथ ब्राह्मण - (सं) राजेन्द्रलाल मित्र और एच. विद्याभूषण, कलकत्ता, १९७२

११. ताण्ड्य ब्राह्मण - बिब्लियोथिका इण्डिका

१२. तैत्तिरीय ब्राह्मण- (सं) राजेन्द्रलाल मित्र, कलकत्ता, १८५५-७०

१३. पंचविश ब्राह्मण - (सं) ए. वेदान्त वागीश, कलकत्ता, १८६९-७४

१४. शतपथ ब्राह्मण - (सं) ए. वेबर, लन्दन, १९२४

१५. जैमिनीय ब्राह्मण - (सं) रघुवीर और लोकेशचन्द्र, नागपुर, १९५४

आरण्यक् -

१६. ऐतरेय आरण्यक् - (सं) ए.बी. कीथ, आर्क्सफोर्ड, १९०९

१७. तैत्तिरीय आरण्यक् - अन्नन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, नं. ३६, पूना, १९२७

१८. शांखायन आरण्यक् - (सं) ए.बी. कीथ, ऑक्सफोर्ड, १९०९

उपनिषद् -

१९. अथर्वशिर्स उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

२०. ईशोपनिषद् - निर्णयसागर संस्करण, मुम्बई, १९३०

२१. उपनिषद्भाष्य, ४ खण्ड - गीताप्रेस संस्करण, सं. १९९२-२०१०

२२. कठोपनिषद् - निर्णयसागर संस्करण, मुम्बई, १९३०

२३. केनोपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

२४. कैवल्य उपनिषद् -लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

२५. छान्दोग्य उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

२६. जाबाल उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

२७. तैत्तिरीय उपनिषद् - शांकर भाष्य सहित, पंचम संस्करण, आन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना १९२९

२८. नारायण उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

२९. नृसिंह तापनीयउपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

३०. प्रश्न उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

३१. मैत्रायणी उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

३२. बृहदारण्यक् उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

३३. श्वेताश्वेतर उपनिषद् - लक्ष्मणशास्त्री संस्करण, मुम्बई, १९२७

सूत्र-साहित्य -

३४. आपस्तम्ब श्रौतसूत्र - आर गार्बे द्वारा सम्पादित, कलकत्ता, १९८२

३५. आश्वलायन श्रौतसूत्र - (सं) आर. विद्यारत्न कलकत्ता, १८६४-७४

३६. कात्यायन श्रौतसूत्र - ए.बेबर द्वारा सम्पादित, लन्दन, १९५५

३७. शांखायन श्रौतसूत्र - हिलब्राण्ट द्वारा सम्पादित, कलकत्ता, १८८२

३८. लाट्यायन श्रौतसूत्र - बिब्लियोथिका इण्डिका

३९. वैखानस श्रौतसूत्र - (सं) डब्ल्यू केलेण्ड, बिब्लियोथिका इण्डिका, सं २६५, कलकत्ता, १९४१

४०. गोभिल गृह्यसूत्र - (सं) एफ. नादर, डॉरपेट, १८८४

४१. पारस्कर गृह्यसूत्र - (सं) गोपालशास्त्री चौखम्बा संस्कृत सीरीज, बनारस, १९२६

४२. मानव गृह्यसूत्र - गायकवाड़ ओरिएण्टल सीरीज

४३. बौधायन गृह्यसूत्र - (सं) शामशास्त्री आर. मैसूर, १९२०

४४. हिरण्यकेशी गृह्यसूत्र - (सं) जे. किर्त्से, वियना, १८८९

४५. आपस्तम्ब धर्मसूत्र - जी. ब्यूलर, बम्बई संस्कृत सीरीज, मुम्बई १९३२

४६. गौतम धर्मसूत्र - (सं) स्टेञ्जलर, १८७६

४७. बौधायन धर्मसूत्र - जी. ब्यूलर, से.बु.ई. १४, ऑक्सफोर्ड, १८८२

४८. वशिष्ठ धर्मसूत्र - (सं) ए.ए. फ्यूरर, मुम्बई, १९१६

महाकाव्य -

४९. महाभारत - गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण, सं. २०१२-२०२६

५०. रामायण - वाल्मीकि, गीताप्रेस, गोरखपुर संस्करण, १९६९

पुराण -

५१. अग्नि पुराण - (सं) हरिनारायण आप्टे, आन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना, १९००

५२. कूर्म पुराण - नीलमणि मुखोपाध्याय, कलकत्ता, १९१३

५३. गणेश पुराण -आन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना

५४. गरुड़ पुराण - से.बु.ई., भाग-९

५५. ब्रह्म पुराण - आन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना,१८९५

५६. ब्रह्मवैवर्त पुराण - गुरुमण्डल ग्रंथमाला सीरीज, कलकत्ता, १९५५

५७. ब्रह्माण्ड पुराण वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, १९२३

५८. मत्स्य पुराण - आन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना, सं. १९०७

५९. मार्कण्डेय पुराण - (सं) के.एम. बनर्जी, बिब्लियोथिका इण्डिका, कलकत्ता, १८६२
(अनु.) एफ. ई. पार्जीटर, कलकत्ता, १९०४

६०. सौर पुराण - आन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना १९२४

६१. वायु पुराण - (सं) एच. एन. आप्टे, पूना १९०५

६२. लिंग पुराण - वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, १९२४

६३. नीलमत पुराण - के. डी. व्रीज का संस्करण, लीडन, १९३६

६४. वाराह पुराण - बिब्लियोथिका इण्डिका

६५. विष्णु पुराण - गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. २००९

६६. विष्णुधर्मोत्तर पुराण - वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, १९६९

६७. पद्म पुराण - आन्दाश्रम संस्करण, पूना, १८९३

६८. भविष्य पुराण - वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, १९३०

६९. भागवत पुराण - गीताप्रेस, गोरखपुर

७०. देवीभागवत पुराण - गीताप्रेस, गोरखपुर

अन्य ग्रंथ

१. आचार्य पं. श्रीराम शर्मा - गायत्री महाविज्ञान, ब्रह्मवर्चस शान्तिकुञ्ज हरिद्वार,

२. आचार्य पं. श्रीराम शर्मा - पं. श्रीराम शर्मा, सम्पूर्ण वाङ्मय, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा

३. आचार्य पं. श्री शिवदत्त मिश्र शास्त्री - दुर्गार्चन पद्धति, श्री ठाकु प्रसाद पुस्तक भण्डार वाराणसी, संवत् २०५७

४. आर.पी. शर्मा - शक्ति तत्त्व दर्शन, नागदा, १९७७

५. कल्याण, शक्ति अंक गीताप्रेस, गोरखपुर, १९९१

६. कृष्णदत्त अवस्थी - भारतीय वाङ्मय में सीता का स्वरूप, इलाहाबार, १९७४

७. कृष्णानन्द शास्त्री - श्री दुर्गार्चन सृतिः, भारतीय संस्कृत भवन, जालन्धर , संवत् २०५३

८. गोविन्दचन्द्र राय - प्राचीन भारत में लक्ष्मी प्रतिमा, वाराणसी, १९६४

९. दलाई लामा (१९९७) - ध्यान साधना का विकस, फुल सर्कल दिलशाद गार्डन, जी.टी. रोड, दिल्ली - ११००९५

१०. दुर्गासप्तशती, सप्त संस्कृत टीका सहित, बुटाला एण्ड कम्पनी

११. दुर्गा सप्तशती, गीताप्रेस गोरखपुर, २००३

१२. देवदत्त शास्त्री - तंत्र साधना सार

१३. डॉ. परमहंस मिश्र - तंत्रसार, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, १९९६

१४. डॉ. परमहंस मिश्र - 'हंस' (सम्पादक) - श्री तंत्रालोक, ५ खण्ड, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, १९९२

१५. डॉ. सम्पूर्णानन्द (१९९०) - योगदर्शन, उत्तार प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

१६. परमहंस निरंजनानन्द सरस्वती, तंत्र दर्शन, बिहार योग विद्यालय, मुंगेर

१७. पं. रमेशचन्द्र शर्मा (मिश्र) - सुबोध दुर्गासप्तशती एवं योग विधानम्, मधुरेश प्रकाशन मदनगंज, किशनगंज, २०००

१८. पं. लक्ष्मीनारायण गोस्वामी – दुर्गा तंत्र शास्त्र दुर्गार्चन सृतिः, दीप पब्लिकेशन, आगरा, २००१

१९. पं. सरयू प्रसाद द्विवेदी – सप्तशती सर्वस्वम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, २००१

२०. पं. रामलखन पाण्डे – सर्वांग दुर्गाचन सृतिः, आनन्द प्रकाशन कूँचा चेलान, खारी बावली, दिल्ली

२१. बी.के. अयंगर – योग दीपिका, ओरियन्ट लॉगमैन लिमिटेड, नई दिल्ली १९९४

२२. बलदेव उपाध्याय – भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा, पटना, १९६३

२३. महर्षि यतीन्द्र – कुण्डलिनी तंत्र, दीप पब्लिकेशन, आगरा, २००१

२४. महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज – गायत्री रहस्य, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक, १९७५

२५. रामकृष्ण शर्मा 'राजर्षि' (१९९५) – अष्टांग योग रहस्य (घेरण्ड संहिता), रणधीर प्रकाशन रेल्वेरोड (हरिद्वार) २४९४११

२६. व्रजवल्लभ द्विवेदी, विज्ञान भैरव, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली (पुनर्मुद्रण) २०००

२७. रामकुमार राय – हिन्दी मंत्रमृहार्णव, प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी, २०००

२८. सुखनन्द मिश्र – महानिर्वाण तंत्रम्, खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन मुम्बई, १९९६

२९. स्वामी ओमानन्द तीर्थ – पातंजल योग प्रदीप, गोविन्द भवन, कार्यालय गीताप्रेस गोरखपुर, २७३००५

३०. स्वामी विवेकानन्द – राजयोग श्रीरामकृष्ण आश्रम नागपुर

३१. स्वामी चिन्मयानन्द –ध्यान और जीवन, श्रीमती शीलापुरी, दिल्ली, १९५५

३२. स्वामी विवेकानन्द – प्रेमयोग, श्रीरामकृष्ण आश्रम नागपुर, १९७४

३३. स्वामी लक्ष्यकानन्द – ध्यानयोग प्रकाश, कुमारी विद्यावती सेठ, १९९५

३४. शशिभूषण दास गुप्त – श्रीराधा का क्रमिक विकास, वाराणसी, १९५६

३५. शिवशंकर अवस्थी – मंत्र और मातृकाओं का रहस्य, वाराणसी, १९६६

३६. श्री दुर्गोपासना कल्पद्रुमाध्याय – खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन, मुम्बई

३७. श्री श्यामानन्द राय – सप्तशती–सूक्त रहस्य, कल्याण मंदिर प्रकाशन, प्रयागराज, १९९४

Bibliography

1. Adhar, Candra Chakraborty - Vidyaratna, Kaliprasanna, (Tr.), Radhatantram (2nd Ed.), Kolkata, 1335 B.S.
2. Bhattacharya, Benytosh, (Ed.), Saktisangama Tantra. Oriental Institute, Baroda, 1941.
3. Bhattacharya, History of the Tantric Religion Delhi, 1992, p. 158-210
4. Bhattacharya, Kalimohan, (Ed.), Yoginitantram. (4th ed.), Tarachand Das, Kolkata, 1333 B.S.
5. Bhattacharya, Kaliprasanna, (Tr.), Brihat Tantra Kosa. (3rd ed.), Tara Library, Kolkata, 1337 B.S.
6. Bhattacharya, Krishnananda, Tantrasara. Chowkhamba Skt. Series Office, Benaras, n. d.
7. Bhattacharya, Satish Chandra, (Ed. & Tr.), Kalitantram. Sanskrita Sahitya Parisad, Kolkata, 1329 B.S.
8. Bhattacharya, Siva Chandra, Tantratattva. (2nd ed.), Navabharat Publishers, Kolkata, 1389 B.S.
9. Bhattacharya, Surendranath, (Ed.), Rakshasitantram. (11th ed.), Town Library, Kolkata, 1356 B.S.
10. Chakrabarty, P. C., Sakti in Indian Literature. Visvabani Prakashani, Kolkata, 1983
11. Chatterjee, Rasik Mohan, Rudrayamalam. (3rd ed.), Vidyasagar, Jitendra, (Ed.), Kolkata, 1937
12. Dandiswami, (Ed. &Tr.), Jnanarnavatantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1389 B.S.
13. Das, Asutosh, (Ed.), Tantrabibhuti Manasa Puranam. Kolkata University, Kolkata, 1980

14. Das, Jyotirlal, (Ed. & Tr.), Kamakhyatantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1385 B.S:

15. Das, Jyotirlal, (Ed. & Tr.), Kumaritantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1385 B.S.

16. Das, Jyotirlal, (Ed. & Tr.), Mayatantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1385 B.S.

17. Das, Jyotirlal, (Ed. & Tr.), Yonitantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1387 B.S.

18. Devasanna, Prahllad Prasanna, Kalaukall. Kalaukali Karyalaya, Baranasi, 1389 B.S.

19. F. Maxmuller - The Sacred Books of the East, Vol. 50, Motilal Banarsidas, New Delhi, 1992

20. Feuerstein, Georg., The Encyclopedia of Yoga, Boston: Shambhala Publications, 1997.

21. Frawley, David, Tantric Yoga and the Wisdom Goddesses, Salt Lake City, Passage Press, 1994.

22. George feuerstein - Tantra, The Path of Ecstacy, Shambhals, Boston, 1998

23. Goudriaan, Teun, and Sanjukta Gupta. Hindu Tantric and Sakta Literature. Wiesbaden, Germany: Otto Harrassowitz, I985.

24. Gupta, Sanjukta. Lakshmi Tantra. Leiden; E.J. Brill, 1972.

25. James Hastings (edit) - Encyclopeadia of Religion and Ethics, 12 Vol. T&T Clark, Edinburgh, 1994

26. James Hughton Woods - The Yoga- System of Patanjali, Motilal Banarsidas, New Delhi, 1992

27. John White - Kundalini, Evolution and Enlightenment, Horrper Collins Publishers, 1990

28. Khanna, Madhu. Yantra: The Tantric Symbol of Cosmic Unity. London: Thames and Hudson, 1979.
29. Krishna, Gopi, Kundalini: The Evolutionary Energy in Man. Revised edition. Boston & London: Shambhala Publications, 1997.
30. Rai Ram Kumar, Kularnava Tantra. Varanasi, India: Prachya Prakashan, 1983.
31. M.S.Bhat, Vedic Tantrism, Motilal Banarsidas, 1987
32. Makhin, Bhaskaracharya, Varivasya Rahasyam. Sastri, S. Subrahmanya (Ed.), (The) Adyar Library, Adyar, Chennai, 1941
33. Manna, Sibendoo, - Mother Goddess Chandi, Kolkata, 1993.
34. Ramkumars Rai. Mantra-Yoga Samhita, Varanasi, India: Chaukhambha Orientalia, 1982.
35. Mukherjee, Upendra Nath, (Tr.), Mahanirvana Tantra, Basumati Sahitya Mandir, Kolkata, 1384 B.S.
36. N.N Bhattacharya, History of the Tantric Religion, Delhi, 1992
37. Nandi, Sunil, (Ed.), (Tantra) Kalirahasya. (2nd ed.), Bhadrakali Yoga Mission Prakashani, Bhadrakali, 1393 B.S.
38. Pandit, M. P., (Ed.), Kularnava Tantra, (2nd ed.), Ganesh & Co., Chennai,1973
39. Pandit, M. P., (Ed.), Kundalini Yoga. Ganesh & Co., Chennai, 1959
40. Pott, P. H. Yoga and Yantra: Their Interrelation and Their Significance for Indian Archeology. The Hague: E. J. Brill, 1966.
41. Ramanuja, (Acarya), Tantrarahasyam. Sastri, R. Sharma, (Ed.), Central Library, Baroda, 1923
42. Rao, S. K. Ramachandra, Tantra-Mantra-Yantra. Arnold Heinemann Publishers, New Delhi, 1979

43. Sanatanadevji, (Swami), (Ed.), Tripurarahasya. The Chowkhamba Sanskrit Series Office, 1967

44. Sankara, (Acarya), (The) Saundaryalahari. Brown, w. Norman, (Ed.), Harvard University Press, U.S.A., 1958

45. Saraswati, Sarveswarananda, (Ed. & Tr.), Yoginitantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1385 B.S. ,

46. Sastri, Ayodhyanath, (Ed. & Tr.), Kalikalamalinitantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1386 B.S.

47. Sastri, Bisvanarayana, (Ed.), Yoginitantram. Bharatiya Vidya Prakashan, Delhi, 1982

48. Satprem - Mother Triology, 3 Vol., Mira Aditi Center Myssore

49. Schoterman, J. A., The Yonitantra. New Delhi: Manohar, 1980.

50. Silbum, Lilian. Kundalini: The Energy of the Depths. Albany: SUNY Press, 1988.

51. Sir John Woodroffe - Principals of Tantra, 2 Vol., Ganesh and Co. Chennai, 1991

52. Sir John Woodroffe - The Garland of letters - Ganesh and Co. Chennai, 1994

53. Sir John Woodroffe - The Word of Power, Ganesh and Co. Chennai, 1994

54. Smrititirtha, Nityananda, (Ed. & Tr.), Kalitantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1388 B.S.

55. Sri Aurobindo - Savitri, Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry, 1944

56. Sri Aurobindo - The Mother, Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry, 1944

57. Swami Kriyananda - Raja Yoga, Motilal, Banarsidas New Delhi, 2003

58. Tarkatirtha, Pancanan, (Ed. & Tr.), (Sanuvada) Mundamalatantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1387 B.S.

59. Tigunait, Rajmani, Saktism: The Power in Tantra. Honesdale, Penn.: The Himalayan International Institute, 1998.

60. Tigunait, Rajmani. Sakti Sadhana: Steps to Samadhi-A Translation of the Tripura Rahasya. Honesdale, Penn.: The Himalayan International Institute, 1993.

61. Vedantatirtha, Girish Ch. & Siddhantabhusan, Satish Ch., (Eds.), Saraswatitantram. Navabharat Publishers, Kolkata, 1383 B.S.

PERIODICALS

1. Beads of Truth, 3HO Foundation, 1620 Press Road, Los Angeles, Calif. 90035
2. Human Dimensions, Human Dimensions Institute 4620 West Lake Road, Canandaigua, N .Y. 14424 Vol. 5, No.3, 1976.
3. Kundalini Quarterly, Kundalini Research Institute P.O. Box 1020, Claremont, Calif. 91711.
4. Spiritual India and Kundalini "Shanti Villa", 1615 Madarsa Road Kashmere Gate, Delhi 110006, India.

SPECIAL ARTICLES

5. Campbell, Joseph. "Kundalini Yoga: Seven Levels of Consciousness," Psychology Today, Vol. 9, No.7, Dec. 1975.
6. Jung, Carl, "Psychological Commentary on Kundalini Yoga," spring 1975 (Part I) and 1976 (Part II), Transcript of a seminar given in 1932. Available from Spring Publications, 28 East 39th Street, New York, N.Y, 10016.
7. Krishna, Gopi. "Beyond the Higher States of Consciousness," New York Times, Oct. 6, 1973.
8. White, John. "Kundalini Research," Psychic, Vol. 7, No. 6, Jan.-Feb. 1977.

पत्र-पत्रिकाएँ

१. अखण्ड ज्योति, मासिक अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा - २८१००३
२. कल्याण, मासिक, गीताप्रेस गोरखपुर-२७३००५
३. कौल - कल्पतरुचण्डी, मासिक, कल्याण मंदिर प्रकाशन, आलोपी देवी मार्ग, प्रयागराज
४. युग निर्माण योजना, युग निर्माण प्रेस, युग निर्माण योजना, मथुरा-२८१००३
५. श्री अरविन्द कर्मधारा, त्रैमासिक,श्री अरविन्द आश्रम,श्री अरविन्द मार्ग नई दिल्ली-११००१६
६. योग विधा त्रैमासिकशिवानन्द मठ मुंगेर, बिहार